

1. Write a note on Realist theory of International Relations.

द्वितीय विकासपूर्वक यात्रा विकल्प वाचनीयित हो जाकल
परिवर्तन उत्तम एवं गहरे अनुभव यह वेद किछु उत्तमाध्यक
विकल्प नहीं हो विदेश व्युक्ति भव्य आनुर्जिति वाचनीयित
आनुर्जितिक व्याख्या प्राप्त होकर उपलब्धि, आपदा विकासपूर्वक
भव्य द्वितीय व्युक्ति इसके विषय स्थान गहरे उपर्युक्त व्युक्ति
विकल्प आत्म आनुभव व्युक्ति व्युक्ति अवधारणा, अस्त्रजन्मध्य
अस्त्रि घासा लाहिलिं रुद्धारु आस्त्रा जातात, आरु लालु बुद्ध
उपस्थितारु ओ विकल्प भासि अतिका अव्युवहरण, अहु लाभालाभ
वार्षिकाल येवाई आर्वायालि दृष्टिओ वेक्षिष्येद्धा अस्त्रिष्ठ
वजाय व्याप्ता, ताहु उल्ल वाप्ता इतिहाय जहु अनियर्थाय
तेणी अस्त्रामहु अव्युवहरपुरु अप्रगतिह ईती तेणी अव
आनुर्जिती तेणी नामक दुर्दि त्रुष्य तेणीविन्याय विकल्पव्यवस्था
श्रीवार्णमित विज्ञु अव लालाये उक्तिके अव्याजतान्त्रिक
विषय वा अव्युविन्याय एवं विषय अतिका अनुग्रहिके
क्षेत्रानुवाद अनुवाद, असुनिक विक्षेप वेक्षिष्य व्युक्तिशिविद
ओ चिकामील अश्वल एवं नहुन विषय स्थान अस्त्रप्रवाह
वाहु ता आनुर्जितिक अव्याके अवृत्त वा वाच्यव्युविन्या
अनुवाद निर्देश काहु एवं व्याप्ति ताववादी लम्फवाद्य विष्यवेश
अतिप्रोग एवल एवं वाच्यविल अवूल, अनगता, अस्तेनगत
ओ दैतिक स्थाना व्यक्तिओ येवे क्षमता व्युक्तिशिवि नप्त्र-
व्युवहरणाके शुद्ध आत दृष्टे अव्यिध ताहु वार्ष्य चितीय
विकासपूर्व अस्त्रगच्छ अव्याहरण वाहु।

■ भूलक्षणित गतिशाला :-

चिरीदृष्टि विकायुध काले उत्तम अर्थ
विकायुध विकाया तीर्ति वायुवयानि
दृष्टिकाल नामे प्रविचित। अहे रात्रे या अकाळ अस्ति व्यक्ति
नामे उचित्तिक आठडे अर्धे दृष्टिरुप असेहोर्त सहेच हात.
शास्त्र, अर्गेन्यात, अर्च एकान अस्त्राखेया। असा अकाळ
दृष्टिकिंताने आलोचि अस्ति उत्त्रातिके असन्तुष्टिक उपर्यावर
क्षेत्र मिति तिथि दैक्षिण्यात्मक वर्तावालि निष्ठे भावेत,
अहे उर्ध्वा दृष्टि तुले घेते या अस्त्रकालीन दृष्टिनीति अति
विकायुधनीति इल उत्तमा लग्जाई या अस्ति दृष्टिरुप आणला,
अर्थात् अहे दृष्टिरुप विचारे दृष्टिनीतिक विधाकलाप चलावे
हावे वायुवयात्मकात्मा। वस्तुत वायुवयानीति काढे काढि उ
क्षेत्रात इल दृष्टिनीति इत्तम अस्ति,

■ द्रुतिर्धारा या वक्तव्य :-

वायुवयानी अत्रे वक्तव्याके

अद्यादे अलीयाका काढा चल, यथा —

1. द्रुतिराज सर्वालोचना बऱ्हले देखा घावे या अस्त्र
वज्र आत्म आलालयीत दृष्टिरुप अस्त्रापून।
2. याकीदृष्टि अस्त्र अस्त्रित अर्धे उत्तमा लिप्ता अवर
आपात्कृत उपरुप अस्त्र आपात अस्त्रापूर्व इल अवाचेप्य
विलदजनक अस्त्राति।
3. उपरिकृत आवे अस्त्रि अस्त्र अनप्तीर्वार्य व्यापाद
त्रेत्ये वायुवयिक विचारूपकृति यल दृष्टि र्या उत्तमा अस्त्रित
उत्तमा लात इत्यादि अस्त्रात आत्मिक चर्चितके निष्ठन
काढे देऊपादृत रक्षा अस्त्र उत्तम अस्त्रापूर्व नया।

4. आनुर्जातिक वृजनीति एवं क्रमज्ञ लगाईयेहु या आनु-
र्जातिक अकालज्ञान, अथात् एवं कथित और
विष्णुत्रिपाति अनुकूल रथे सलाह अकालज्ञ विष्णुत्रि
अकालज्ञ लगाए, अर्जन यात्रे रथे जाय अन्यान् वृज-
नीतिहु तरो आनुर्जातिक वृजनीति क्रमज्ञ लगाईयेहु
आनुर्जातिक।
5. ऊहे अवधा विवेचनाय अतेक वृाख्यहु राह्ये एवं जागीय
अस्थायार्थक अर्थात् अन्य वायाप्त यादृ ताम्र क्रमज्ञ अर्जन।
ठोरे घार्याके उपलब्ध अनुदानाली ओ आवास्य अनुकूल वाये
गोला रथे। अन्यान् जागीयहु लक्ष्यहु इन्द्रायाप्त जागीयहु अस्था
यार्थ अतेक वृाख्यहु वाहे आप्तिक शूलस्त्र लात वाये।
6. अर्दभाय क्रमज्ञाके दोकालहु सदाकल त्रापवाहु
उक्ते चूप्त आनुर्जातिक आनु, निधापज्ञ इत्यादिते
वृष्टाप्त वृष्टात्र व्यप्ते लक्ष्यहेहु अवर्दीरु अन्यन वृष्टाप्त
ताप्तक वायाप्ति विनि अमज्ञाप्त उक्तुपिके वायार्थात् आव
उपलक्ष्यि वायदेन। अर्थात् वृष्टान्ताप्तक रथे विच्छिन्न ओ
दृष्टदर्शिता अदर्शत वाहे शूलस्त्र द्विते रथे दृष्टवाक्षालाभि,
त्रिपाति अनिवार्यता लात्याप्तिक वायाप्तस्त्रहु देवहु,
उवे निधापवायुत, अदालतहु वृष्टाप्त लैतिक त्राप्त
सदाप्तनता इत्यादिते उपर्यु नये। ऊहे अकल काढळे
गोला रथे वृजनीतिक वायुव वारीदेहु वाहे निधापच्छिन्न
उक्तिस्त्र वृक्षाज्ञातिते असद्विहेहु जन्य उक्तित ओ अनुप्रवृत्ता
विजावे यादृ ताम्र अवसर्पे उक्तिव्ययोज्य तिनि एवम
अज्ञादेहु जेति।

□ | अक्षय वार्षिकी और उत्तम प्रश्नों:-

वास्तुवादी अन्तर्गत वृक्षिकालि विषय
वृक्षतीर्थिते त्रिधामीलि उपादानस्थलि
अद्वैत तत्त्व, किंतु एहि दृष्टिकोण स्वतः अवधारणा
लोकान् अस्तु ताहि आधिकार अनुभवात् अन्तर्गतम् अवधारणा
प्रयोगात् विकाशीत् राधे अस्ति, वसुत् आपेहि दम्भावात् त्रिधा
दिक् रथाको एहि अन्तर्गत वृक्षिकालि विषये ताहि अनुवादी
अवधि उत्तमालाचक प्रतिकृति लोकात् अनुभवात् राधे अस्ति। अस्ति

1. असत्तर्जिति यदेनामली विषये त्रिधारि उपादाने दृष्टिको
त्रालि विद्वा अस्तु अनुभवात् अविद्यात् विद्यात् अनुवादी
अविद्यात् अस्ति जला बोला पाठ्याङ्गत् लोकात् अकास्ति
लोकात्। यस्ति वास्तुवादी अन्तर्गत बोला विद्यार्थी आन
वा तीति दौड़ बाधात् लोकात् विद्यार्थी द्वाया श्रुत्यन्तात्
उप्यजन्मत्वे निर्वाचन अवधि एहि अकास्ति ताहि व्याख्यात्
विद्यार्थी विद्युत्मावली विधिर्वात् अनुवादात्।

2. वास्तुवादीति यस्ति व्याकात् एव विषये दृष्टिकालि अकास्ति
वार्त्तकात् वृक्षतीर्थिति, वास्तु एवा एहि दृष्टिकालात् विषये
अप्यतिकृतीति। अस्तु यदि ताहि इति, तत्वे वृक्षिकालिके
वृक्षतीर्थि अवधारणा अवधारणा अकिञ्चित् व्याकात् - भव्यात्मक
स्वतःात्, अवधारणा व्याकात्, वृक्षिकालि अनन्तता एहि
स्वतःात्मक वात् विग्रहात् अवधारणा उक्ति हास्ति अस्ति किञ्चित्
नहि।

3. वास्तुवादीति वृक्षिकालि वा वृक्षतीर्थि
स्वतःात्मक एवात् वृक्षतीर्थिति वृक्षतीर्थि इति इति,
वृक्षतीर्थि अस्तीति अस्तीति एव वृक्षतीर्थि।

ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଆମଦିନି ଅପ୍ରକଟିତ ଉଦ୍‌ଦେଶ୍ୟ ହୋଇଥାଏ
ଥିଲା । ଅମ୍ବା ଜୀବିତରେ ବିଜ୍ଞାନି, ଅନୁଷ୍ଠାନିକ
ଶିଳ୍ପୀଙ୍କା, ଆନନ୍ଦାତ୍ମିକ ପିଚିକୀଳଣ ଇଣ୍ଡାନିକ ବିଦ୍ୟା
କାନ୍ତି ଅଛି ଅଗ୍ରଯାଜୀତାର ପାଥରେ ଉପରି ବାକୀ ହୁଲାଇ,

4. ଯାଏବ୍ୟାଦି ଏହି ଚିତ୍ରିତ ବିଜ୍ଞାନାତ୍ମକ କାହାକାରୀ ଅନ୍ଧିତ
ବ୍ୟାକାନ୍ତମ ଯାଏଇ ଅନୁଷ୍ଠାନି କବୁତେ ଆବୁନି । ଖୁବିଅତ୍ମ
ବାଲ ଆର୍ଦ୍ଦେଶ୍ୱର ପୂର୍ଣ୍ଣାତ୍ମକ କାହିଁ ଚାହାଣି କବୁତ୍ତ ଫର୍ଦ୍ଦ
ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ସକଳ ଇଣ୍ଡାନିକ ବିଜ୍ଞାନ ପାଦ୍ୟବିକ ଆର୍ଥ୍ୟାଗାନ୍ତି
ବ୍ୟାକକ ଅନ୍ତର୍ଗତରେ ହାତି ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ଶୁଣ୍ଟିବ୍ୟାକର୍ତ୍ତା ଉଚ୍ଚଗାନ୍ତମ ।
ଅନ୍ତିମିତ୍ର, ଅଧିକ ଦୈନିକରେ ଅନ୍ତିମିତ୍ର ଅନ୍ତିର୍ଦ୍ଦୟରେ ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ଆର୍ଥ୍ୟାଗାନ୍ତି
ବ୍ୟାକକ ବିଜ୍ଞାନ ଅନ୍ତର୍ଗତରେ ଉଚ୍ଚଗାନ୍ତମ ଉଚ୍ଚବ୍ୟାକର୍ତ୍ତା
ହୁଅଛି ଲାଭ । ଜୀବ ଅକଳ ବ୍ୟାକାନ୍ତମ ଜୀବ ଇଣ୍ଡାନିକ ବିଜ୍ଞାନ
କାହିଁ ଏହି ଅଗ୍ରଯାଜୀତାର ହାତୁ ଆର୍ଦ୍ଦେଶ୍ୱରିକାଣ ବଢାଇବାକୁ
ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ଶୁଣ୍ଟିବ୍ୟାକର୍ତ୍ତା ଦିଇଲା, ପାଦ୍ୟବିକ ଲେନଦେନ, ପାଦ୍ୟବିକ
ଆର୍ଥ୍ୟାଗାନ୍ତମ ଓ ଆବୁନି ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ଲ୍ଲୋଟ ନାହିଁ,
ଅନନ୍ତଃବ୍ୟାକର୍ତ୍ତାରେ ନିର୍ବିକୀଳଣ, ଅନନ୍ତଃବ୍ୟାକର୍ତ୍ତାରେ ଆର୍ଥ୍ୟାଗାନ୍ତି
ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ହୁଅଛି, ମନୋଧିକ ଅଭ୍ୟାସ ଏବଂ ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ
ଦିଅିବ୍ୟାକର୍ତ୍ତାରେ ପାର୍ଦ୍ଦ ଶୁଣିବିବାକୁ, ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ଦିଅିବ୍ୟାକର୍ତ୍ତା
ବିଜ୍ଞାନାତ୍ମକ ବ୍ୟାକର୍ତ୍ତାରେ ମୌଳ ଆବଶ୍ୟକ, ଆମଦିନି
ଜୀବଜାତା, ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ପାର୍ଦ୍ଦିବ୍ୟାକର୍ତ୍ତାରେ କିନ୍ତୁ ଆମଦିନି ଅନୁପରିଣ
ଓ ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ଅନ୍ତର୍ମ୍ଭୁତ ବରିଷ୍ଟିରୁ,



ବ୍ୟାପକ ଜ୍ଞାନ :

ମାନୁଷାଳ୍ପିକ ଅଧିକାରୀ ଏହାର ସାଂଘବିଧାନି
ହାତୁମୁଣ୍ଡ ଉଚ୍ଚ ଯୌବନ ଏକ ଦେଶାନ୍ତରିକ ପ୍ରକାର
ମୁଗ୍ଧ ବିଚ୍ଛିନ୍ନ ଏମାନାହିଁ ଫର୍ମ, ଏଥେ ମୁଗ୍ଧ ଫର୍ମ
ଏହାହିଁ ଅଧିକାରୀ ଅଧିକାରୀ ଅନ୍ତରେ ଲୋକରେ ହିଲ ନିଯୁକ୍ତ,
ଏବଂ ଆନ୍ତରୁ ଅଭ୍ୟାସନା ହିଲ ହୁଅଥିଲା ମଧ୍ୟାଏତ୍ତି। ଆରିନ୍ତ
ମୁଖ୍ୟମୁଖ୍ୟ ଏବଂ ଯୋଗିଧିତ ହୈନିଯିତି ନାମେ ହୁଏ ଅଧିକାରୀ
ମନ୍ତ୍ରିଷ୍ଠିତ କ୍ରାନ୍ତିର ଅଧିକାରୀ ଅଧିକାରୀ ଓ ଚାନ୍ଦା ଲଜ୍ଜା,
ଅଧ୍ୟବିଷ୍ଣୁତୀ ଅଧ୍ୟବିଷ୍ଣୁତୀ ଅଧ୍ୟବିଷ୍ଣୁତୀ ଅଧିକାରୀ, ଯିକ୍ଷେତ୍ର
ବିଭିନ୍ନ ଦିକେ କ୍ରାନ୍ତିର ଅଧିକାରୀ ଓ ଅଳାଜାଯାଦି କାର୍ଯ୍ୟ
କଲାପ ଅତ୍ୱି ଯାହା ଯିକ୍ଷେ ହୃଦୟନିତି ବିଷୟରେ ସାଂଘଦ
ଯାଦି ହୃଦୟଗତ ହୃଦୟବେଳେନ୍ତୁ ଯିବାହୁ ଶୀଘ୍ରକାରେ ଅଧର୍ଥନ କରି
ଏଥାପି ମାନୁଷାଳ୍ପିକ ଯାହା ଅବାହେ ବାହୁ ମୁଦ୍ରଣପୂର୍ବ
ପଣ୍ଡିତଙ୍କୁ ଅନୁଧ୍ୟତାରୁ ବ୍ୟାପକ, ଯୋଗିତ ଲାଗି ଏବଂ
ଉପସ୍ଥାପିତ ଅମଧ୍ୟିନ ଅତ୍ୱି ଅଧିକାରୀ ଶାନ୍ତିରୁ ବ୍ୟାପକ,
ଦେଶବନ୍ଦୀ ଏହ ହୃଦୟବେଳକେ କାମକରେ ନିଷ୍ପର୍ବ କାର୍ଯ୍ୟ
କରାନ୍ତି।